क्या यही प्यार है?

(01.08.2022)

अर्थ है या ये अर्थ हीन?
शब्द है या शब्द विहीन
मौसम है या सिर्फ बरसात
या सिर्फ हैं ये उलझे जज़्बात
आग और... फिर सब शान्त!

कभी लगे ये दौड़ता रक्त
और कभी मात्र भाव फकत
अनमोल है या सूक्ष्म मोल?
या सिर्फ ये इक अदद बोल
क्यों लगता कभी मोहमाया
और कभी धूप कभी छाया!

शरीर का उफान है क्या?
यानि सिर्फ एक है तूफ़ान
जो गरजता है बेईमान सा
और तृप्त हो कर भी रहे
कुछ परेशान और वीरान
क्या इसे कहूं सिर्फ़ हसरतें
और बल खाते हुए अरमान
क्यों नहीं ये लालच से रहित
बल्कि सिर्फ संवेदनाओं सहित
कभी दिखाता आईना मुझे
और कभी सिखाता है तुझे!

सत्य होना चाहिए था इसे
पर क्यों है यह अर्धसत्य?
कभी अपेक्षाओं का तांता
कभी परीक्षाओं की गाथा
क्या यह मात्र भ्रम है ईश्वर!
या फिर हमराज हमबिस्तर
मौन हो या एक अभिव्यक्ति
हमेशा विद्यमान रहती विरक्ति

क्यों सब कुछ अधूरा सा?
क्यों नहीं होता ये पूरा सा
वक्त है या सिर्फ इक पैमाना
या है फिर एक पैगाम बेगाना
क्यों लाता है डर का ही संदेश
न कि जीवन का सच्चा उपदेश
काश होता प्रेरक हर प्राणी के लिए
अपितु बदलता ही रहता ये वेश

क्यों नहीं पढ़ पाता अनकही?
और कह भी दो तो बेबजही
महसूस करवाता अपना वजूद
और अपने नाम में ही मगरूर
कभी लगे, कुछ तो दम होगा!
चूंकि चढ़ने लगे, तो इतना सरूर
फिर अचानक से ख्याल आया...
कुछ तो है दोस्त! सच से दूर??
क्यों लगने लगा है, सिर्फ शब्द!
प्यार है, या स्वयं पर प्रतिबंध!

क्या ये सब सिर्फ मेरी है व्यथा?
या फिर तुम सब की है यही कथा
क्या यह प्यार है, या आकर्षण!!
आकर्षण कहूं तो कैसी व्यवस्था?
शारीरिक, मानसिक या दार्शनिक?
या इन तीनों की ही मिश्रित सी प्रथा

भगवान शिव ने पार्वती से कहा...
अन्नपूर्णा से कामाख्या जैसा "भोग"
गौरी से दुर्गा "शक्ति" का हृदय
नियोग
और काली से सरस्वती "दर्शन" रूपी
मस्तिष्क का समागम व पूर्ण सहयोग

मुझे कुछ ऐसा प्रतीत होता है दोस्त!
"आकर्षण" से "प्यार" का ये सफर....
जो तय कर गया उसे न हुआ वियोग
संबंधों की परिभाषा में वो परम् योग
जो फंस गया भंवर में, ये सिर्फ प्रयोग
और निकल ही न पाया, तो है ये
रोग।